दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 15.05.2010 समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 6

शीर्षक :प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

समयः 3 घंटे पूर्णांकः 75

सूचनाः1.खण्ड 'क' किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

2.खण्ड 'ख' अनिवार्य है।

खण्ड 'क' **4x10=40**

1.**पद्मावती समय** के आधार पर चन्दबरदाई के काव्य–कौशल को प्रतिपादित कीजिए।

2.विद्यापति श्रृंगार और भक्ति के कवि हैं– सिद्ध कीजिए।

3.कबीर क्रांति दर्शी कवि थे–विवेचन कीजिए।

4.नागमति वियोग–खंड के आधार पर जायसी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5.विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की राम के प्रति अनुरक्ति का विवेचन कीजिए।

6.सूर साहित्य की मूल विशेषताओं पर एक सारगर्भित लेख लिखिए।

7.बिहारी ने दोहे जैसे छोटे छंद में गहरी से गहरी बात कही है– समझाइए।

खण्ड 'ख'

8.निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः **5x7=35**

1. मन हूँ कला ससिमान, कला सोलह सो बन्निय।
बल बेस ससि ता सपी, अम्रित रस पिन्निय।
बिगसि कमल म्रिग–भ्रमर, बैन, षंजन मृगलूट्टिय।
फीर, फीर अरु बिंब, मोति नष सिष अहिघट्टिय।।

अथवा

कुट्टिल केश सुदेष, पौहय रचियत पिक्क सद।
कमलगद्य वयसंध, हँसगति चलत मंद –मंद।।
सेतवस्त्र सौंहे सरीर, नव स्वाति बुंदजस।
भवर भँव हि भुल्लहिं सुभाव मकरंदबास रस।

2. लंबा मारग दूरि घर,बिकट पंथ बहु भार।
कहौ संतो क्यूं पाइये, दुर्लभ हरि दीदार।
हौं विरह की लाकड़ी, समझि समुझि धूँधाऊँ।
छूटि पड़ौ या बिरह तैं, जे सारी ही जलि जाऊँ।।

अथवा

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढै बन मांहि।
ऐसैं घटि घटि राम है, दुनियाँ देखै नांहिं।।
हेरत हेरत हे सखी, रहा कबीर हिराइ।
बूँद समानी समुंद्र मैं, सो कत हेरी जाइ।।

3. भा भादों दूभर अति भारी । कैसे भरौं रैनि अंधियारी।।
मंदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि फिर डसा।।
रहौ अकेलि गहे एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमक बीजू, धन गरजितरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।।

अथवा

लाग कुवार, नीर जग धटा। अबहूँ आउ, कंत। तन लटा।
तो हि देखो, पिउ। पसुहै क्या। उतराचीतू, बहुरि करु मया।।
चिया मित्र मीन कर भावा। पपिहा पीउ पुकारत पावा।।
उआ अगस्त, हस्ति धन गाजा। तुरंथ पलानि चढ़े रन राजा।।

4. बिलग जनि मान हु ऊधौ प्यारे।
वह मधुरा काजर की को ठरिजे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे सुफलक सूत कारें, कारे मधुरप भँवारे।
तिनके संग अधिक छवि उपजत कमल नैन मनिआरे।

अथवा

निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर। हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी।।
को है जनक, जननी को कहियत, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेस है कैसो के हि रस कै अभिलासी।।

5. बड़े न हू जै गुनन बिन, बिरद बडाई पाय।
कहत धातूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय।।
नये बिससिये लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाय।
आँटे परि प्रानन हरें, काट्ट लौं लगि पाय।।

अथवा

अनिधारे दीरध दृगनि, कितौ न तरुनि समान?
वह चितवनि और कछू, जि हि बस होत सुजान।,
पत्रा ही तिथि पाइये, वा घर के हूँ पास।
नित प्रति पून्योई रहत आनन ओप उजास।।

****

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 17.05.2010 समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 8

शीर्षक :हिन्दी भाषा की प्रकृति और विकास

(हिन्दी पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में)

समयः 3 घंटे पूर्णांकः 75

सूचनाः1.किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

2.खण्ड 'क' तथा 'ख' से दो–दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

3.खण्ड 'ग' अनिवार्य है।

खण्ड 'क' 5x15=75

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी और हिन्दी की प्रयुक्तियों से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिए।

2. हिन्दी पत्रकारिता के विकास पर एक निबंध लिखिए।

3. राजभाषा हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका और उसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।

4.हिन्दी पत्रकारिता और अनुवाद का क्या संबंध है? स्पष्ट कीजिए।

खण्ड 'ख'

5.साहित्यिक और साहित्येतर हिन्दी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए प्रयोजनमूलक हिन्दी की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

6. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अज्ञेय के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

7. ''आर्थिक पत्रकारिता के अनुरूप हिन्दी का स्वरूप निर्मित हो रहा है।''इस कथन की समीक्षा कीजिए।

8.वर्तमान समय में हिन्दी की आवश्यकता पर एक निबंध लिखिए।

खण्ड 'ग'

9.निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए।

क.हिन्दी का क्षेत्रीय संदर्भ

ख.प्रयोजनमूलक शैली

ग.संसदीय प्रयोजनमूलक हिन्दी

****

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 16.05.2010 समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 7

शीर्षक :भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

समयः 3 घंटे पूर्णांकः 75

सूचनाः1.किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **5x15=75**

2.अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।

3.सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1.भारतीय आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य–लक्षणों पर प्रकाश डालिए।

2.काव्य प्रयोजन संबंधी आचार्यों के मतों का विवेचन कीजिए।

3.रस की परिभाषा देते हुए रसनिष्पत्ति संबंधी विभिन्न आचार्यों के मतों की विवेचना कीजिए।

4.रीति विज्ञान की मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए।

5. अरस्तू के विरेचन सिद्धांत की समीक्षा करते हुए साहित्य के क्षेत्र में इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

6.उदात्त किसे कहते हैं? लोंजाइनस की उदात्त की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

7.क्रोचे के अभिव्यंजनावाद को समझाइए।

8.मैथ्यू आर्नाल्ड के काव्य सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए।

9.निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए।

क. काव्यहेतु

ख. लक्षणा शब्दशक्ति

ग.काव्य में अलंकारों का स्थान

घ.प्लेटो का काव्य सिद्धांत

च.निर्वैयक्तिकतावाद

छ.त्रासदी

****

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 14.05.2010 समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 5

शीर्षक :प्रयोजन मूलक हिन्दी एवं अनुवाद

समयः 3 घंटे पूर्णांकः 75

सूचनाः1. खंड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

2.खंड 'ख' अनिवार्य है।

खंड 'क' 4x10=40

1.अनुवाद की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

2.कार्यालयी हिन्दी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके वाक्य विन्यास पर प्रकाश डालिए।

3.विज्ञान संबंधी सामग्री के अनुवाद की कठिनाइयों पर प्रकाश डालिए।

4.हिन्दी विज्ञापन की भाषा की संरचना पर एक लेख लिखिए।

5.टिप्पणी लेखन के सामान्य सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए प्रशासनिक टिप्पणियों की विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाइए।

6.सरकारी पत्रों के प्रकारों पर प्रकाश डालते हुए किसी एक पत्र का मसौदा तैयार कीजिए।

7.निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।

क.प्रेस विज्ञप्ति ख. कार्यालय आदेश ग.अर्धसरकारी पत्र घ.अधिसूचना

खंड'ख'

8. निम्नलिखित शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 10x1=10

क. अर्जित अवकाश ख. प्रतिवेदन ग. विनिमय घ. राजस्व विभाग च. सूची

छ. अभिलेख ज. ज्ञापन झ. राजभाषा ट. स्पष्टीकरण ठ. संलग्नक

9. निम्नलिखित शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 10x1=10

क. Allotment ख. Deputation ग. Adjustment घ. Advance च. Anamalous

छ. Necessary action ज. Summary झ. Undsersigned ट. Sanction ठ. Reminder

10. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 7x1=7

क. पत्र की पावती भेजें ख. कृपया आदेश दें ग. अतिगोपनीय घ. सिफारिश के अनुसार

च. सशर्त स्वीकार छ. दक्षतारोध पार करना ज. नियमों के अधीन देय

11.निम्नलिखित अभिव्यक्तियों का हिन्दी में अनुवाद दीजिए। 8x1=8

क. As early as possible ख. Steps may be taken ग. Draft for approval घ. Entries have been checked and verified

च. Enquiry may be completed छ. Enclosures as follows

ज. Explanation may be called for झ. Further report may be awaited

****

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

मई 2010

दिनांकः 17.05.2010 समयः10.00 बजे से 1.00 बजे तक

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. द्वितीय वर्ष परीक्षा

विषयः हिन्दी प्रश्न पत्रः 8

शीर्षक :विशेष अध्ययन – प्रेमचन्द

समयः 3 घंटे पूर्णांकः 75

सूचनाः1.खंड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

2.सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

3.खंड 'ख' अनिवार्य है।

खंड 'क' 4x10=40

1.'सेवा सदन' में सुमन का चरित्र 'नारी' के आत्म सम्मान का प्रतीक है – विवेचना कीजिए।

2.' ठाकुर का कुआँ ' में वर्णित दलित समस्या का मूल्यांकन कीजिए।

3.'गुल्ली–डंडा' कहानी का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

4.'निर्मला' की कथावस्तु का विवेचन मध्यवर्ग की सामाजिक संरचना के संदर्भ में कीजिए।

5.'गबन' किस प्रकार समाज और राष्ट्र निर्माण में स्त्रियों की भूमिका को दर्शाता है? स्पष्ट कीजिए।

6.'गोदान'–कृषक जीवन का महाकाव्य है।' इस कथन पर तर्क संगत विचार कीजिए।

7.'पूस की रात' में व्यक्त कृषक की विड़ंबना पर चर्चा कीजिए।

खंड 'ख'

8.निम्नलिखित व्याख्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 5x7=35

क. विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन–तीन, चार–चार आने पैसे खर्च किये; पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट–फूट जायेंगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों।

अथवा

करुणा जीवित थी; पर संसार उनका कोई नाता न था। उसका छोटा–सा संसार जिसे उसने अपनी कल्पनाओं के हृदय में रचा था, स्वप्न की भाँति अनन्त में विलीन हो गया था। जिस प्रकाश को सामने देखकर वह जीवन की अंधेरी रात में भी हृदय में आशाओं की संपत्ति लिए जा रही थी, वह बुझ गया और सम्पत्ति लुट गयी।

ख. क्या कसूर किया था बेचारे ने? गाडी में साँस लेने की जगह नहीं, खिड़की पर जरा साँस लेने खड़ा हो गया तो उस पर इतना क्रोध ! अमीर होकर क्या आदमी अपनी इनसानियत बिल्कुल खो देता है?

अथवा

मैं जब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच में दीवार बन गई है। अब मैं उसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। हममें कोई भेद न था। यह पाकर अब मैं केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।

ग. हाथ–पाँच तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से।ब्रहम–देवता आर्शीवाद देंगे, ठाकूर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुभार पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?

अथवा

उसने जाकर आले पर से रुपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुखे से एक रोटी खाने को तो मिलेंगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह उसीमें झोंक दो, उस पर से धौंस।

घ. सुमन को घर से निकालने की बात कहकर वह मानों ब्रहम फाँस में फँस गये। वह मन में पछताने लगै कि उदारता को धुन में इतना असावधान क्यों हो गया? तिरस्कार को माला भी उनकी आशा से अधिक हो गई। वह न समझे कि तिरस्कार का यह रूप धारण करेगा और उससे मेरे हृदय पर इतनी चोट लगेगी। अनुतप्त हृदय यह तिरस्कार चाहता है जिसमें सहानुभूति और सहृदयता हैं।

अथवा

क्या करूँ, जगहँसाई भी तो अच्छी नहीं लगती। कोई शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े दर्शन थोड़े। फिर जब कह मुझसे दहेज एक पाई नहीं लेते तो मेरा भी कर्तव्य हैं कि मेहमानों के आदर–सत्कार में कोई बात उठा न रखूँ।

ड. यह सब कहने की बातें हैं। हम लोग दाने–दाने को मुहताजे है, देह पर साबित कपड़े नहीं हैं, चोटी का पसीना एड़ी तक आता है, तब भी गुजर नहीं होता। उन्हें क्या, मजे से गद्दी–मसनद लगाए बैठे हैं, सैकड़ों नौकर–चाकर हैं, हज़ारों आदमियों पर हुकूमत है। रुपये न जमा होते हों; पर सुख तो सभी तरह का भोगते हैं। धन लेकर आदमी और क्या करता है?

अथवा

जिस आदमी में हत्या करने की शक्ति हो उसमें हत्या न करने की शक्ति अचंभे की बात है। जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं, तो शक्ति आप ही आप आ जाती है। तुम यह निश्चय कर लो कि तुम्हें बयान बदलना है, बस सारी बातें आप ही आप आ जाएगी।

****